

नवंबर-दिसंबर के मुख्य बागवानी कार्य

हरे कृष्ण[1], अनूप प्रताप सिंह[1], अरविंद कुमार सिंह[2] और आशुतोष कुमार मिश्र[3]

भारत में वर्षभर विभिन्न ऋतुओं का प्रभाव देखने को मिलता है। इनमें हेमंत ऋतु का विशेष महत्व है। यह शरद और शिशिर ऋतु के बीच आती है तथा सामान्यत: नवंबर-दिसंबर के महीनों में रहती है। इस दौरान तापमान में गिरावट और दिन की अवधि कम होने से फलदार फसलों की वृद्धि एवं विकास में अनेक परिवर्तन होते हैं। विभिन्न फलों की तुड़ाई, नए पौधों की रोपाई, कटाई-छंटाई तथा बाग प्रबंधन की दृष्टि से यह अवधि महत्वपूर्ण होती है। उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंधीय फलदार फसलों के प्रबंधन की दृष्टि से भी यह अवधि महत्वपूर्ण है। अनार तथा नीबूवर्गीय फसलों में विभिन्न बहारों के अनुसार पुष्पण एवं फल विकास की अवस्थाएँ देखने को मिलती हैं। इस प्रकार पौधों की अवस्था और मौसम के अनुसार सिंचाई, पोषक तत्व प्रबंधन तथा कीट एवं रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। बाग की नियमित सफाई, सूखी एवं रोगग्रस्त शाखाओं को हटाने तथा आवश्यकतानुसार कटाई-छंटाई करने से पौधों का स्वास्थ्य बेहतर बनाए रखने में सहायता मिलती है। इससे बाग में सूर्य का प्रकाश और वायु संचार भी सुगम होता है।

नवंबर-दिसंबर के दौरान संतरा, मौसंबी, किन्नू, अमरूद तथा अन्य मौसमी फलों की तुड़ाई एवं विपणन का कार्य विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है। दूसरी ओर, सेब, नाशपाती और आड़ू जैसे शीतोष्ण फलदार वृक्षों में पर्णपात के साथ सुषुप्तावस्था आरंभ हो जाती है। इस दौरान कम तापमान इन फसलों की शीत आवश्यकता पूरी करने में सहायक होता है, जो आगामी मौसम में कलियों के प्रस्फुटन, पुष्पण और फलन के लिए महत्वपूर्ण है। उपयुक्त जलवायु वाले क्षेत्रों में सुषुप्तावस्था के दौरान इन फलों के पौधों की रोपाई की जा सकती है। इसी प्रकार, अंगूर में पर्णपात के बाद क्षेत्र की जलवायु और किस्म के अनुसार कटाई-छंटाई की जाती है।

हेमंत ऋतु में तापमान में कमी के कारण आम, केला, पपीता तथा अन्य शीत संवेदनशील फलदार फसलों को नुकसान पहुँचने की आशंका रहती है। विशेषकर पाला पड़ने वाले क्षेत्रों में नवरोपित एवं छोटे पौधों की सुरक्षा आवश्यक है। इसके लिए पौधों को उपयुक्त आवरण से ढकना, तनों के आसपास पलवार बिछाना तथा मौसम की स्थिति के अनुसार हल्की सिंचाई करना उपयोगी हो सकता है।

पलवार से मृदा में नमी बनाए रखने और जड़ क्षेत्र के तापमान में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को कम करने में सहायता मिलती है। हालांकि, पाले से बचाव के उपाय स्थानीय मौसम और बाग की परिस्थितियों के अनुरूप अपनाने चाहिए।

[1]भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश-221305, [2]केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र (केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान), वेजलपुर (गोधरा), गुजरात-389340,[3]उदय प्रताप कॉलेज, नारायणपुर, वाराणसी

इस अवधि में पौधों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखना चाहिए। मृदा परीक्षण एवं फसल की अवस्था के अनुसार जैविक खाद, उर्वरकों तथा आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों का संतुलित प्रयोग आगामी वृद्धि एवं फलन के लिए लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त, कीटों एवं रोगों की नियमित निगरानी तथा आवश्यकता के अनुसार समेकित प्रबंधन अपनाने से बागों को स्वस्थ एवं उत्पादक बनाए रखा जा सकता है।

आम

नवंबर-दिसंबर में सामान्यत: बाग में सिंचाई बंद रखनी चाहिए, लेकिन आवश्यक निराई-गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई अवश्य करें। पाले से वृक्षों की सुरक्षा के लिए धुआँ करने के साथ-साथ हल्की सिंचाई भी करें। नर्सरी के पौधों को पाले से बचाने के लिए छप्पर से ढक दें। नए बागों में छोटे पौधों को पुआल अथवा एल्काथेन की चादरों से बने छप्परों से ढकें, लेकिन पूर्व दिशा खुली रखें, ताकि पौधों को पर्याप्त प्रकाश और हवा मिलती रहे।

दिसंबर में 10 वर्ष से अधिक आयु के वृक्षों में 1,500 ग्राम फॉस्फोरस तथा 1,000 ग्राम पोटाश प्रति वृक्ष की दर से दें। साथ ही, अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद 30-40 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष की दर से अवश्य डालें। नवंबर में शीर्षारंभी क्षय के लक्षण सामान्यत: दिखाई देते हैं। प्रभावित शाखाओं को मृत ऊतकों से लेकर स्वस्थ हरे भाग से 5-10 सेंटीमीटर नीचे तक काटकर रोगग्रस्त भाग हटा दें। इसके बाद कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

इस अवधि में बाग की जुताई करके खरपतवारों को नियंत्रित करें। जुताई से मिलीबग, मिज, फल मक्खी और गुजिया



अमरूद की स्वस्थ नर्सरी



डाली पर लदे आम

कीट के अंडे एवं प्यूपे नष्ट होते हैं, जिससे इन कीटों का प्रकोप कम करने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त, अक्तूबर में बाग में बाढ़ सिंचाई करने से मिलीबग के अंडों को नष्ट करने में मदद मिलती है।

मिलीबग को वृक्षों पर चढ़ने से रोकने के लिए तने पर जमीन से 40-60 सें.मी. की ऊँचाई पर 30-45 सें.मी. चौड़ी, 400 गेज की एल्काथेन पॉलीथीन बाँधें। पॉलीथीन लगाने से पहले तने की छाल के सभी छिद्रों और दरारों को मिट्टी से अच्छी तरह बंद करें अथवा पॉलीथीन के निचले किनारे की ओर ग्रीस लगाएँ, अन्यथा मिलीबग इन दरारों से होकर वृक्ष पर चढ़ सकते हैं।

यदि निम्फ वृक्षों पर चढ़ चुके हों, तो नीम बीज गिरी के अर्क (5 मि.ली. प्रति लीटर) अथवा नीम तेल (5 मि.ली. प्रति लीटर + डिटर्जेंट पाउडर 1 ग्राम प्रति लीटर) के घोल का छिड़काव करें। साथ ही, वृक्षों के थालों में क्लोरोपाइरीफॉस कणिकाएँ 250 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें।

वैकल्पिक रूप से, स्पाइरोटेट्रामैट 11.01 प्रतिशत + इमिडाक्लोप्रिड 11.01 प्रतिशत एससी की अनुशंसित मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। मिलीबग के नियंत्रण के लिए अर्का मिली मेल्ट का उपयोग छिड़काव सहायक के रूप में करें। यह मिलीबग की सुरक्षात्मक मोमी परत को घोलकर उसे कीटनाशी के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

जिन वृक्षों में गोंदस्राव (गमोसिस) दिखाई दे, उनके प्रभावित भागों को खुरचकर साफ करें और बोर्डो लेप (कॉपर सल्फेट : बुझा चूना : पानी = 1 : 1 : 10) लगाएँ। छाल खाने वाले कीट के नियंत्रण के लिए यह ऋतु उपयुक्त है। कीट द्वारा बनाए गए छिद्रों की पहचान करके उनमें मिट्टी के तेल अथवा पेट्रोल से भीगी रुई डालें और छिद्रों को गीली मिट्टी से बंद कर दें।

शूटगॉल सिला से प्रभावित शाखाओं को काटकर नष्ट कर दें। फोमा ब्लाइट से बचाव के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। समय से पहले निकलने वाले पुष्पगुच्छों को काटकर अलग कर दें, जिससे गुच्छा रोग के प्रकोप को कम किया जा सके।

अमरूद

नवंबर-दिसंबर के दौरान अमरूद के बागों में निराई-गुड़ाई, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन, कीट नियंत्रण, फलों की तुड़ाई तथा विपणन की समुचित व्यवस्था करें। पाले से बचाव के लिए वृक्षों एवं छोटे पौधों की उचित सुरक्षा करें। छाल खाने वाले कीटों के नियंत्रण के लिए उनके द्वारा बनाए गए छिद्रों की पहचान करके उनमें मिट्टी के तेल अथवा पेट्रोल में भीगी रुई डालें और छिद्रों को गीली मिट्टी से बंद कर दें।

पके फलों को पक्षियों से बचाने के लिए वृक्षों पर चमकीले फीते लगाएँ। पक्षियों को भगाने के लिए मानव आकार के पुतले अर्थात बिजूका अथवा पटाखों की आवाज का भी उपयोग किया जा सकता है। पके फलों की समय पर तुड़ाई करके उन्हें बाजार भेजने की व्यवस्था करें। तुड़ाई के बाद फलों को छायादार स्थान पर रखकर धोएँ, सुखाएँ और उचित तरीके से भंडारित करें। फलों को आकार एवं किस्म के आधार पर श्रेणीबद्ध करने से बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त किया जा सकता है।

स्टूलिंग विधि से पौधे तैयार करने के लिए 2-3 वर्ष पुराने पौधों को जमीन से 4-5 इंच की ऊँचाई पर काटें, जिससे अगली तिमाही में नए अंकुर विकसित हो सकें। नवंबर में बाग की निराई-गुड़ाई करने के साथ-साथ आवश्यकतानुसार सिंचाई की व्यवस्था करें। नवंबर-दिसंबर में अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद के साथ सिंगल सुपर फॉस्फेट और म्यूरेट ऑफ पोटाश जैसे रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

यूरिया की आधी मात्रा नवंबर में तथा शेष आधी मात्रा जुलाई में दें। छह वर्ष पुराने पौधों के लिए सामान्यत: 60 कि.ग्रा. गोबर की खाद, 1 कि.ग्रा. यूरिया, 2.5 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट और 0.5 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश अथवा प्रति वृक्ष प्रति वर्ष 75 ग्राम नाइट्रोजन, 65 ग्राम फॉस्फोरस और 50 ग्राम पोटेशियम देने की संस्तुति की जाती है। उर्वरकों की वास्तविक मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर निर्धारित करें। अमरूद की पोषक जड़ें मृदा की सतह से लगभग 25 सें.मी. की गहराई तक होती हैं। इसलिए उर्वरकों को वृक्ष के तने से 1 मीटर दूर बनाई गई 25 सें.मी. गहरी खाइयों में डालें, ताकि पौधे पोषक तत्वों का अधिकतम उपयोग कर सकें।

लीची

नवंबर में प्ररोहों से निकलने वाले नए अंकुरों को हटा दें। छाल खाने वाले कीट का प्रकोप दिखाई देने पर तत्काल उसका प्रबंधन करें। दिसंबर में जिंक सल्फेट का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा 20-25 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से मिट्टी में मिलाएँ। जिंक सल्फेट के प्रयोग से मादा पुष्पों की संख्या बढ़ती है।

लीची में मिलीबग की रोकथाम के लिए क्लोरोपाइरीफॉस कणिकाओं का 250 ग्राम प्रति वृक्ष की दर से वृक्ष के चारों ओर एक मीटर के घेरे में बुरकाव करें। इसके बाद तने पर जमीन से 30-40 सें.मी. की ऊँचाई पर 400 गेज की 30 सें.मी. चौड़ी एल्काथीन पट्टी कसकर बाँधें तथा इसके दोनों सिरों पर गीली मिट्टी अथवा ग्रीस का लेप करें, ताकि मिलीबग वृक्ष पर न चढ़ सकें।

नवंबर में अर्धकुंडलक कीट (सेमी लूपर) का प्रकोप होने पर नीम आधारित रसायनों, बीटी आधारित रसायनों अथवा डेल्टामेथ्रिन 2.5 ई.सी. का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। दिसंबर में प्रति वृक्ष 25-30 कि.ग्रा. अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद डालें। इस द्विमासिक अवधि में पुराने बागों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग एवं सिंचाई न करें।

तना बेधक कीट का प्रकोप होने पर साइप्रमेथ्रिन का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें तथा चिंचड़ियों से प्रभावित भागों को काटकर नष्ट कर दें। नए बागों में छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए पुआल से बने छप्परों से ढकें तथा बाग में हल्की सिंचाई करते रहें।

बेर

नवंबर-दिसंबर में बेर की फसल में फल मक्खी का प्रकोप अधिक होता है। मादा फल मक्खी विकसित हो रहे फलों में अंडे देती है, जिससे फल क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। प्रभावित फलों को एकत्र करके नष्ट कर दें तथा रोकथाम के लिए 15 दिनों के अंतराल

पपीता

पिछले माह लगाए गए पौधों की नियमित सिंचाई करें तथा बाग की सफाई करके खरपतवारों को हटा दें। पौधों को पाले से बचाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए नवंबर के अंत में पौधों को तीन ओर से पुआल से अच्छी तरह ढक दें तथा दक्षिण-पूर्व दिशा खुली रखें। साथ ही, समय-समय पर धुआँ करें। प्रभावित पौधों के गिरे हुए अवशेषों को एकत्र करके नष्ट कर दें तथा टॉप्सिन एम (0.1 प्रतिशत) अथवा मैंकोजेब (0.2-0.25 प्रतिशत) का घोल बनाकर छिड़काव करें। यह छिड़काव 15-20 दिनों के अंतराल पर दोहराएँ। नवंबर के पहले और तीसरे सप्ताह में हल्की सिंचाई करने के बाद बाग में निराई-गुड़ाई करें। दिसंबर में फॉस्फोरस एवं पोटाश युक्त उर्वरकों को मिट्टी में अच्छी तरह मिलाएँ तथा सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करें। उत्तर भारत में अप्रैल से जुलाई के बीच रोपे गए पौधों के फल दिसंबर-जनवरी में तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। जब फल तोड़ने पर दूध जैसा तरल पदार्थ निकलने लगे, तब पपीते की तुड़ाई करें।



पपीता

केला

दक्कन जैसे क्षेत्रों में यदि केले की रबी ऋतु की रोपाई शेष हो, तो इसे इस द्विमासिक अवधि में पूरा कर लें। नवंबर-दिसंबर में केले के प्रत्येक पौधे में 55 ग्राम यूरिया का प्रयोग करें तथा 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहें। यदि पौधों में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखाई दें, तो फेरस सल्फेट (0.5 प्रतिशत), जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) और बोरेक्स (0.5 प्रतिशत) का पर्णीय छिड़काव करें। केला पाले से अत्यधिक संवेदनशील होता है, इसलिए दिसंबर में पौधों को पाले से बचाने के लिए विशेष उपाय करें। इसके लिए रात के समय बाग में धुआँ करें तथा आवश्यकतानुसार पौधों के ऊपर फुहार द्वारा पानी का छिड़काव करें। पर्ण चित्ती एवं फल सड़न रोग की रोकथाम के लिए 1 ग्राम कार्बेण्डाजिम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।



केले के स्वस्थ फल

अनार

इस द्विमासिक अवधि में अनार की फसल को जीवाण्विक अंगमारी, कवकजनित रोगों तथा हानिकारक कीटों से बचाने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी), मैंकोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) तथा टीपोल अथवा ट्वीन 20 (0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त, बोर्डो मिश्रण (0.5 प्रतिशत), ब्रोनोपोल (0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) तथा कैप्टॉन 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) की दर से 5-7 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना भी लाभकारी है। मृदा की स्थिति, पौधों की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सिंचाई की समुचित व्यवस्था करें।



पौष्टिक बेर

पर रासायनिक कीटनाशकों का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त, प्रति एकड़ 6-10 फेरोमोन ट्रैप 3-4 फुट की ऊँचाई पर लगाएँ। फेरोमोन ल्यूर तैयार करने के लिए 60 मि.ली. एथिल एल्कोहॉल, 40 मि.ली. मिथाइल यूजीनॉल तथा 20 मि.ली. मैलाथियॉन अथवा डीडीवीपी को 6:4:2 के अनुपात में मिलाकर मिश्रण तैयार करें। ल्यूर को 30-40 दिनों के अंतराल पर बदलें।

तना छेदक कीट का प्रकोप होने पर मोनोक्रोटोफॉस अथवा पेट्रोल में भिगोई हुई रुई को कीट द्वारा बनाए गए छिद्रों में भरकर उन्हें मिट्टी से बंद कर दें, जिससे कीट अंदर ही मर जाएँ। इस अवधि में बेर में चूर्णिल आसिता रोग का प्रकोप भी हो सकता है। इसके नियंत्रण के लिए सल्फर (0.25 प्रतिशत), कैराथेन (0.05 प्रतिशत) अथवा टेबुकोनाजोल का छिड़काव करें।

इस मौसम में फलों का विकास तेजी से होता है। इसलिए बाग में पर्याप्त सिंचाई की व्यवस्था रखें तथा मौसम की स्थिति के अनुसार 3-4 सप्ताह के अंतराल पर सिंचाई करें। बेर में फलों का झड़ना एक प्रमुख समस्या है। इसके नियंत्रण के लिए 2,4-डी (10-15 पीपीएम) अथवा एनएए (20-30 पीपीएम) का छिड़काव करें।

पहला छिड़काव सितंबर अथवा अक्तूबर में, जब वृक्षों पर पूरी तरह पुष्पण हो जाए तथा दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के एक माह बाद करें। उत्पादन एवं फलों के आकार में सुधार के लिए नवंबर के मध्य में पोटेशियम नाइट्रेट (1.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

आँवला

इस द्विमासिक अवधि में आँवले की फसल को दीमक से बचाने के लिए क्लोरोपायरीफॉस का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। शूटगॉल मेकर कीट से प्रभावित टहनियों को काटकर नष्ट कर दें तथा वृक्षों पर एजाडिरेक्टिन (1000 पीपीएम) और मैंकोजेब (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। फलों के झड़ने की समस्या होने पर बोरेक्स (0.6 प्रतिशत) का छिड़काव करें। फल गलन की समस्या होने पर ब्लाइटॉक्स का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

आँवले के फलों की तुड़ाई नवंबर से फरवरी तक की जाती है। जिन क्षेत्रों में नवंबर-दिसंबर के दौरान तुड़ाई होती है, वहाँ फलों से लदी शाखाओं को बाँस-बल्लियों का सहारा दें, ताकि अधिक भार के कारण वे टूटने से बच सकें। इस अवधि में फलों का



गुणकारी आंवला

विकास होता है। इसके लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें, लेकिन तुड़ाई से 15 दिनों पहले सिंचाई बंद कर दें, ताकि फल समय पर तैयार हो सकें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई करके उन्हें बाजार भेजने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें। शीत ऋतु में आँवले के वृक्षों में पर्णपात होता है तथा वे सुषुप्तावस्था में चले जाते हैं।

खजूर

इस अवधि में खजूर के बागों में कोई विशेष कृषि कार्य नहीं किया जाता है। हालांकि, 15 दिनों के अंतराल पर वृक्षों की सिंचाई अवश्य करें। इस दौरान खजूर में सामान्यत: किसी विशेष रोग या कीट का प्रकोप नहीं होता है। फिर भी, बाग की नियमित निगरानी करें, ताकि किसी रोग अथवा कीट का प्रकोप दिखाई देने पर समय रहते उचित प्रबंधन किया जा सके।

बेल

बेल के पौधों के छत्रक (घेराव) को आवश्यकतानुसार व्यवस्थित किया जा सकता है। पौधों की शाखाओं की कटाई-छंटाई पत्तियाँ गिरने के बाद करें। कटाई-छंटाई के बाद नई शाखाएँ निकलती हैं, जिससे पौधों का छत्रक घना होता है और फल सूर्य की तेज गर्मी से झुलसने से बच जाते हैं। पौधों की सधाई के लिए सुधरी प्ररोह विधि सबसे उपयुक्त है। पर्ण सुरंगी एवं पर्णभक्षी इल्लियों का प्रकोप दिखाई देने पर कीटनाशकों का दो से तीन सप्ताह के अंतराल पर एक या दो बार छिड़काव अवश्य करें।

अनन्नास

नवंबर-दिसंबर में फसल निर्धारण के लिए पौधों की पत्तियों में 25 पीपीएम नेफ्थेलिन एसिटिक अम्ल का घोल रात के समय डालें। तैयार फलों की समय पर तुड़ाई करके उन्हें बाजार भेजने की समुचित व्यवस्था करें। अनन्नास में रोगों अथवा कीटों से प्रभावित भागों एवं पौधों को एकत्र करके नष्ट कर दें। बाग से खरपतवारों को हटाएँ तथा पलवार की व्यवस्था करें, ताकि मृदा में पर्याप्त नमी बनी रहे और खरपतवारों को भी नियंत्रित किया जा सके।



बेल

अक्तूबर में अनन्नास की फसल के अवशेषों को निकालकर नष्ट कर दें। मृदा की स्थिति एवं प्रकार, पौधों की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की परिस्थितियों के अनुसार सिंचाई करें। पौधों की आयु के अनुसार फॉस्फोरस एवं पोटाश का प्रयोग करें। कीटों एवं रोगों से बचाव के लिए नीम के तेल (2 प्रतिशत) का छिड़काव करें। बाग की सीमाओं पर ऐसी फसलें लगाएँ, जिनमें कीटों एवं रोगों का प्रकोप कम होता है।

लोकाट

नवंबर में लोकाट के वृक्षों में पुष्पण होता है। इसलिए इस दौरान बागों में सिंचाई नहीं करनी चाहिए। दिसंबर में फल लगने शुरू होने के बाद 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें, ताकि फलों का समुचित विकास हो सके। पुष्पण के दौरान किसी भी कीटनाशी का प्रयोग न करें, क्योंकि इससे परागणकर्ता कीट प्रभावित हो सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप परागण प्रक्रिया बाधित हो सकती है और फलन में कमी आ सकती है।

लोकाट की गोल्डन येलो एवं पेल येलो किस्मों के लिए बाग में कैलिफोर्निया एडवांस किस्म को परागणकर्ता के रूप में लगाना चाहिए, क्योंकि इन किस्मों में स्वपरागण की क्षमता नहीं होती है। नवंबर में ही पॉलीथीन की चादरों से पलवार बिछाएँ, ताकि मृदा में नमी संरक्षित रखी जा सके।

नीबूवर्गीय फल

नवंबर-दिसंबर में अनेक नीबूवर्गीय फलों की तुड़ाई शुरू हो जाती है। इस दौरान तुड़ाई से पहले फलों का झड़ना एक गंभीर समस्या होती है। फलों को झड़ने से बचाने के लिए 2,4-डी का 10 पीपीएम अर्थात 1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

दिसंबर में नीबूवर्गीय फलदार वृक्षों में गोंदस्राव की समस्या बढ़ सकती है। इसकी रोकथाम के लिए तने की प्रभावित छाल को खुरचकर हटा दें तथा खुरचे हुए भाग एवं उसके आसपास के स्वस्थ हिस्से पर बोर्डो लेप (1:2:20) लगाएँ। दिसंबर में तैयार फलों की समय पर तुड़ाई करके उन्हें बाजार भेजने की समुचित व्यवस्था करें।

सेब

नवंबर में बाग की सफाई करके निराई-गुड़ाई का कार्य पूरा कर लें। दिसंबर में नए बाग लगाने के लिए पहले सप्ताह तक गड्ढों की भराई कर लें। निचले पहाड़ी क्षेत्रों

चीकू

इस द्विमासिक अवधि में चीकू के पौधों को दीमक से बचाने के लिए क्लोरोपाइरीफॉस (2 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें। भूमि के नीचे तथा मुख्य शाखाओं के निचले हिस्से से निकलने वाले अंकुरों को हटा दें। मूलवृंत से निकलने वाली शाखाओं को भी निकाल दें। मृदा की स्थिति एवं प्रकार, पौधों की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की परिस्थितियों के अनुसार सिंचाई करें। बाग से खरपतवारों को नियमित रूप से हटाएँ तथा साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें, ताकि कीटों से होने वाली हानि को कम किया जा सके।

कटहल

इस द्विमासिक अवधि में कटहल के वृक्षों की पतली शाखाओं पर नर पुष्प निकलते हैं, जो बाद में झड़ जाते हैं। ग्राफ्टिंग द्वारा प्रवर्धन के लिए नवंबर उपयुक्त माह होता है। चूर्णिल रोग का प्रकोप होने पर सल्फर आधारित फफूंदनाशी का छिड़काव करें। वहीं, मिलीबग कीट की रोकथाम के लिए वृक्षों पर आम की भाँति पॉलीथीन की पट्टियाँ लगाएँ।

में, जहाँ अधिक ठंड नहीं पड़ती है, दिसंबर के अंत तक पौधों की रोपाई की जा सकती है। अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए बाग में 2-3 किस्मों का होना आवश्यक है।

अधिक ठंड वाले क्षेत्रों में दिसंबर के दौरान पौधों की कटाई-छंटाई करें। कटे हुए भागों पर चौबटिया लेप लगाएँ। इसे कॉपर कार्बोनेट, रेड लेड और अलसी के तेल को 4:4:6 के अनुपात में मिलाकर तैयार किया जाता है। तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए डायथेन एम-45 अथवा बाविस्टिन के घोल का तने के चारों ओर छिड़काव करें। सेंजोस स्केल कीट के नियंत्रण के लिए दिसंबर में हिंदुस्तान पेट्रोलियम स्प्रे ऑयल अथवा एग्रो स्प्रे ऑयल का छिड़काव अवश्य करें।

आड़ू, खुबानी एवं आलूबुखारा

दिसंबर में नए बाग लगाने के लिए गड्ढों की भराई का कार्य पूरा कर लें। प्रत्येक गड्ढे में 15-20 कि.ग्रा. गोबर की खाद तथा फॉस्फोरसयुक्त उर्वरक मिलाएँ। इसी माह पौधों की कटाई-छंटाई का कार्य भी करें। जड़ छेदक कीट से बचाव के लिए क्लोरोपाइरीफॉस का प्रयोग करें। तराई एवं मैदानी क्षेत्रों में आड़ू की रोपाई का कार्य दिसंबर के अंत तक पूरा कर लें।

अंगूर

नवंबर में अंगूर के बाग की सफाई करके उसे खरपतवार मुक्त रखें। हल्की सिंचाई के बाद निराई-गुड़ाई अवश्य करें। दिसंबर का महीना अंगूर के नए बाग लगाने के लिए उपयुक्त होता है। इस माह के अंतिम सप्ताह में एक वर्ष पुरानी जड़युक्त लताओं को तैयार गड्ढों में लगाकर सिंचाई करें। रोपाई के बाद पौधों को 15 सें.मी. की ऊँचाई से काटें।



रसीले अंगूर

दिसंबर में अंगूर की लताएँ सुषुप्तावस्था में प्रवेश करती हैं और इस दौरान पत्तियाँ पीली होकर झड़ जाती हैं। इस अवस्था में लताओं की कटाई-छंटाई (प्रूनिंग) की जा सकती है। मस्कट, पचाद्राक्षा, बेंगलुरु ब्लू, अनाब-ए-शाही तथा अर्का संकर किस्मों में सामान्यत: चार कली स्तर पर तथा थॉम्पसन सीडलेस में दो कली स्तर पर कटाई-छंटाई करें।

स्ट्रॉबेरी

खेत तैयार करने से पहले प्रति हैक्टर 40-50 टन अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद डालकर जुताई करें। रोपाई के लिए 10 × 3 × 0.5 फुट आकार की क्यारियाँ तैयार करें। स्ट्रॉबेरी की रोपाई अक्तूबर के अंत अथवा नवंबर के प्रारंभ में करें। नवंबर में रोपाई के बाद पौधों में फुटाव शुरू होने पर निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को हटा दें। पौधों में 4-5 पत्तियाँ आने पर नाइट्रोजन की पहली खुराक दें।



स्वस्थ स्ट्राबेरी

दिसंबर में पत्तियों पर धब्बा रोग के लक्षण दिखाई देने पर डाइथेन एम-45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा बाविस्टिन का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। पौधों की बेहतर वृद्धि के लिए क्यारियों पर पॉलीथीन के टेंट लगाए जा सकते हैं। इसी माह नाइट्रोजन एवं पोटाश की शेष खुराक भी दें। नियमित अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा मृदा में नमी बनाए रखने और पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए पुआल, पौधों की पत्तियों अथवा पॉलीथीन से पलवार बिछाएँ।

इसी के साथ नवंबर-दिसंबर की द्विमासिक अवधि में किए जाने वाले प्रमुख फलोत्पादन संबंधी कार्यों पर हमारी चर्चा यहीं पूर्ण होती है। अगली द्विमासिक अवधि में अनेक फलदार वृक्षों में पुष्पण की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। यह समय आगामी फल उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस दौरान नवस्थापित बागों की देखभाल, निराई-गुड़ाई, सिंचाई, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन तथा कीटों एवं रोगों की रोकथाम पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। फलों की बेहतर गुणवत्ता और अधिक उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए बागों का समय पर समुचित प्रबंधन करना अत्यंत आवश्यक है।

जनवरी-फरवरी की अगली द्विमासिक अवधि में फलदार फसलों में किए जाने वाले प्रमुख कृषि कार्यों एवं आवश्यक प्रबंधन संबंधी उपयोगी और अद्यतन जानकारी हम आपके लिए **'फल-फूल'** के अगले अंक में लेकर आएँगे। आशा है कि आपका स्नेह और सहयोग इसी प्रकार बना रहेगा।